डॉ. भारिल्ल के विशेष प्रवचन

रायपुर (छत्तीसगढ) : यहाँ क्षमावाणी के अवसर पर विभिन्न मंदिरों में तीन प्रवचन हुये। सर्वप्रथम दिनांक 30 सितम्बर को सायं 8 बजे चूड़ी बाजार स्थित शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में तथा दिनांक 1 अक्टूबर को प्रात: 8 बजे शंकर नगर स्थित चंद्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर में क्षमावाणी पर प्रवचन हुये।

चूड़ी बाजार स्थित शांतिनाथ दि. जैन मंदिर में डॉ. भारिल्ल का सम्मान करते हुए

क्षमावाणी पर खचाखच भरे हॉल में डॉ. भारिल्ल के सर्वाङ्ग मार्मिक प्रवचन सुनकर संपूर्ण समाज अत्यधिक प्रभावित हुआ। इस अवसर पर चूड़ी बाजार स्थित शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में प्रवचन में क्षमावाणी क्या है, उसका क्या महत्व है, क्षमा किससे और क्यों मांगी जाती है, स्वयं के जीवन में क्षमा की क्या उपयोगिता है आदि विषय का ज्ञान तत्त्वरसिक जिज्ञासुओं को हुआ। यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित राजेशजी शास्त्री गुडा द्वारा दशलक्षणधर्म पर प्रवचन हुये थे। समाज के अध्यक्ष श्री अजयकुमारजी ने डॉ. भारिल्ल का माल्यार्पण कर व शॉल ओढाकर सम्मान किया।

शंकर नगर स्थित चंद्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर में समाज के अध्यक्ष श्री कमलकुमारजी पाटनी व मंदिर के सचिव श्री पी.सी. जैन ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया। तत्पश्चात् उनका क्षमावाणी विषय पर प्रवचन हुआ। यहाँ पर भी अनेक साधर्मियों ने प्रवचन का लाभ लिया। यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित रामनरेशजी शास्त्री खड़ैरी द्वारा दशलक्षणधर्म पर प्रवचन हुये थे।

दिनांक 1 अक्टूबर को सायं टैगोर नगर स्थित पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर के हॉल में सायं 8 बजे डॉ. भारिल्ल द्वारा भगवान आत्मा पर प्रवचन हुआ। इससे भी समाज बहुत प्रभावित हुआ। अधिकांश साधर्मियों ने डॉ. भारिल्ल को प्रथम बार सुना था।

तत्पश्चात् टैगोर नगर स्थित पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में प्रवचन के पूर्व श्रीमती ममता जैन ने डॉ. भारिल्ल का परिचय समाज को दिया। प्रवचनोपरान्त समाज के अध्यक्ष जीवनलालजी जैन एवं सचिव श्री अजयजी जैन ने शॉल ओढाकर व श्रीफल भेंटकर उनका सम्मान किया।

न्यूयार्क में डॉ. भारिल्ल

क्वीन्स, न्यूयार्क में स्थित जैन मंदिर में डॉ. भारिल्ल द्वारा रविवार 14 अक्टूबर को प्रात: क्षमावाणी पर मार्मिक प्रवचन हुआ, जिसे सम्पूर्ण जैनसमाज न केवल उत्साहपूर्वक सुन अपितु सराह भी रही थी। उन्हें आगामी पर्युषण में पधारने का हार्दिक आमंत्रण भी दिया।

ध्यान रहे यहाँ डॉ. भारिल्ल डॉ. धीरूभाई के तबियत पूछने हेतु दश दिन के लिये पधारे थे। उनके प्रवचन और तत्त्वचर्चा उनके घर पर प्रतिदिन होती थी।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 31 (वीर नि. संवत् - 2538) 352 अंक : 4

मेरे कब ह्वै वा दिन ...

मेरे कब ह्वै वा दिन की सुघरी।।टेक।।

तन बिन वसन असन बिन वन में निवसों नासादृष्टि धरी।।
मेरे कब ह्वै वा दिन...।।1।।

पुण्य-पाप परसौं कब विरचों परचों निजनिधि चिर बिसरी।
तज उपाधि सजि सहज समाधि सहों घाम हिम मेघझरी।।
मेरे कब ह्वै वा दिन...।।2।।

कब थिरजोग धरों ऐसो मोहि उपल जान मृग खाज हरी।
ध्यान कमान तान अनुभव-शर छेदों किहि दिन मोह अरी।।
मेरे कब ह्वै वा दिन...।।3।।

कब तृन कंचन एक गिनों अरु, मनिजड़ितालय शैल दरी।
'दौलत' सत्गुरु-चरन सेव जो पुरवो आश यहै हमरी।।
मेरे कब ह्वै वा दिन...।।4।।

- कविवर पण्डित दौलतरामजी

छहढाला प्रवचन

संवर एवं निर्जरा तत्त्व

शम-दम तैं जो कर्म न आवैं, सो संवर आदरिये।
तप-बल तैं विधि झरन निर्जरा, ताहि सदा आचरिये।।९।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

आत्मा में जिसका अस्तित्व हो वही आत्मा के लिये सुखरूप या दुःखरूप होता है। आत्मा के अस्तित्व में जो है ही नहीं, वह सुख-दुःख का कारण नहीं होता। जैसे, खरगोश के सींग हैं ही नहीं तो वह किसी को लगता नहीं; वैसे ही आत्मा में कर्म हैं ही नहीं तो वह आत्मा में कुछ करता नहीं।

- आत्मा में आनन्दस्वभाव का अस्तित्व है, उसके अवलंबन से सुख की अनुभूति होती है।
- स्वभाव को भूलकर आत्मा रागादिरूप परिणमे, उसमें आकुलतारूप दुःख है।
- जीव के सुख या दुःख में बाह्यपदार्थ कारणरूप नहीं है।
- किसी एक ही बाह्यपदार्थ में एक जीव सुख की कल्पना करता है, दूसरा दुःख की; अतः सुख-दुःख की कल्पना का भी कारण परद्रव्य नहीं ठहरा।
- जो जीव ऐसा जाने, वह परद्रव्य में सुख-दुःख की बुद्धि तथा राग-द्वेष को छोड़कर, अपने भाव में जैसे सुख हो और दुःख मिटे - ऐसा उपाय करता है अर्थात् संवर-निर्जरा का उपाय करता है और आस्रव-बंध को छोड़ता है।

नवतत्त्व की पहचान में यह सब आ जाता है। कई लोग नवतत्त्व के नाम याद करते हैं; किन्तु नाम याद करना पर्याप्त नहीं है, उनके स्वरूप की भी पहचान करनी चाहिए।

जिससे पाप या पुण्य का आस्रव हो, वह स्वयं दुःख है और दुःख का ही कारण है। अज्ञानी पुण्यास्रव को धर्म का कारण मानता है; परन्तु शास्त्र तो कहते हैं कि वह दुःख का ही कारण है। आस्रव अभी भी दुःख हैं और भविष्य में भी उसके साथ का संबंध दुःख का ही कारण होता है। जो स्वयं दुःखस्वरूप ही है, वह सुख का कारण कहाँ से होगा ? सुख का कारण तो सुख से भरपूर ऐसा अपना स्वभाव ही है, उसी के

सेवन से वर्तमान में सुख है और उसका फल भी सुख ही है, वह कभी दुःख का कारण नहीं होता। ऐसा तत्त्वज्ञान करना ही सुखी होने का उपाय है।

हे जीव ! तू परपदार्थ को अपने से भिन्न जानकर उसकी ममता छोड़ दे। पर की ओर के भावों को भी दुःखरूप जानकर उसका भी सेवन छोड़। इसप्रकार पर से भिन्न और परभावों से भी भिन्न ऐसे तेरे निजस्वरूप को देख। उसे देखते ही तुझे परमसुख होगा। सातों तत्त्वों का सार इसमें आ गया।

परद्रव्य जीव को दुःख नहीं देते; यदि परद्रव्य जीव को दुःखी करते हों, तब उस दुःख से छूटना भी जीव के आधीन नहीं रहा। परद्रव्य जब छोड़े, तब जीव दुःख से छूटे; परन्तु ऐसा नहीं है। दुःख के कारण मिथ्यात्वादि भाव जीव में हैं और जीव उन्हें छोड़े, तब दुःख छूट जाते हैं; अतः दुःख से छूटना अपने आधीन है। अपना सुख अपने में है, उसे जीव स्वाधीनता से भोग सकता है।

जैसे जीव के सुख का कारण परवस्तु नहीं है, वैसे ही दुःख का कारण भी परवस्तु नहीं है। अरे ! संसार के कल्पित सुख का कारण भी परवस्तु नहीं है, वहाँ भी जीव की अपनी कल्पना ही सुख-दुःख का कारण है। जिसप्रकार कोई अज्ञानी धन या स्त्री आदि में सुख माने, तो वहाँ उस मान्यता का कारण धन आदि नहीं हैं; ये धन आदि विद्यमान रहते हुए भी उसमें सुख की कल्पना को जीव छेद सकता है; उसीप्रकार शरीर में रोगादि होते हुए भी उसमें दुःख की कल्पना को जीव छेद सकता है।

बाहरी पदार्थ उनके अस्तित्व में हैं, वे जीव में नहीं हैं।

सुख या दुःख का अस्तित्व जीव में है, पर में नहीं है।

प्रतिकूल संयोग और दुःख हो तो भी उस दुःख का अस्तित्व जीव में है, संयोग में नहीं है। जीव अपने आनंदस्वभाव को भूलकर, परवस्तु में सुख की कल्पना कर उसके गाढ़ प्रेम में रुक गया है। जीव जबतक पर में सुख मानेगा, तबतक उसका उपयोग पर से नहीं छूटेगा और स्व में नहीं आयेगा, अतः उसे संवर-निर्जरा नहीं, आस्रव-बंध ही होगा।

यहाँ कहते हैं कि जीव को किसी प्रकार का भी आस्रव और बंध हो तो उसे भला नहीं मानना; बंध के कारणरूप मिथ्यात्व या शुभ-अशुभ भावों का सेवन नहीं करना; परन्तु मोक्ष के कारणरूप सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप वीतरागभाव का निरंतर सेवन करना; क्योंकि उसका सेवन ही भावसंवर और भावनिर्जरा है। अशुभ को छोड़ना चाहिये और शुभराग को आदरना चाहिये - ऐसा अज्ञानी मानते हैं; ज्ञानी तो

अशुभ और शुभ - दोनों से भिन्न शुद्धभाव को ही ग्रहण करते हैं; शुभ अशुभ दोनों को ज्ञान से भिन्न जानकर छोड़ देते हैं।

देखो ! सात तत्त्व के निर्णय में यह सब समा जाता है।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र द्वारा कषायों का अभाव होने से वीतरागी शांत परिणाम प्रगट होना 'शम' है और आत्मा के अतीन्द्रिय स्वभाव की अनुभूति के बल से इन्द्रिय की ओर का भाव छूट जाना 'इन्द्रियदमन' है। अकेले उपवासादि से इन्द्रियों को सुखा देने की बात नहीं है। वे इन्द्रियाँ तो जड़ हैं; उन इन्द्रियों की ओर का भाव छोड़कर अतीन्द्रियज्ञान से आत्मा के आनंद का अनुभव करना 'इन्द्रियजय' (जितेन्द्रियपना) है। ऐसे शम और इन्द्रियदमन भेदज्ञान सहित शुभभाव से होते हैं और उनसे ही संवर-निर्जरा होती हैं। जो इन्द्रियों को अपनी माने, ज्ञान का साधन माने, वह उसका अवलंबन क्यों छोड़े ? वह तो अपना ज्ञान इन्द्रियों में ही लगावेगा; अत: उसे इन्द्रियदमन नहीं हो सकता। शम-दम-तप या संवर-निर्जरा तो स्वद्रव्य के ही अवलंबन से होते हैं; पर के अवलंबन से नहीं होते।

अरे, स्वद्रव्य को छोड़कर धर्म कैसे हो सकता है ? परसन्मुख रहकर निमित्त को बदलने से अथवा राग का प्रकार (तीव्र-मंद) बदलने से कुछ नहीं होगा; किन्तु जब स्वसन्मुख होकर रागरहित शुद्ध परिणति करेगा, तभी जीव को संवर-निर्जरा और धर्म होगा।

भगवान आदिनाथ या भगवान महावीर ने मुनिदशा में जो तप किया, उसमें तो चैतन्य की उग्र शुद्धता का प्रतपन था; बाह्य दृष्टि वाले जीवों ने उस शुद्धता को तो नहीं देखा और बाह्य में अन्न-पानी का संयोग न होने को ही तप मान लिया; परन्तु तप का स्वरूप ऐसा नहीं है। तप तो चैतन्य की दशा है, वह शरीर में नहीं रहता। यदि संवर-निर्जरा का सच्चा स्वरूप पहिचाने तो ऐसे तप के सच्चे स्वरूप की पहचान हो। इसलिए सम्यग्दृष्टि को सात तत्त्व की पहचान कैसी होती है, उसका यह वर्णन चल रहा है। उसमें छह तत्त्वों का कथन हुआ, अब आगे सातवाँ मोक्ष तत्त्व कहते हैं। ●

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

नियमसार प्रवचन -

उत्तम सुख की प्राप्ति का उपाय

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 43वीं गाथा के पश्चात् समागत कलशों पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। कलश मूलत: इसप्रकार है -

(इन्द्रवज्रा)

इत्थं निजज्ञेन निजात्मतत्त्वमुक्तं पुरा सूत्रकृता विशुद्धम्।
बुद्ध्वा च यन्मुक्तिमुपैति भव्यस्तद्भावाम्युत्तमशर्मणेऽहम् ।।६७।।

(दोहा)

सूत्रकार मुनिराज ने आतम दियो बताय।
उससे भवि मुक्ति लहें मैं पूजूँ मन लाय।।६७।।

इसप्रकार सूत्रकर्ता श्रीमद्भगवत्कुन्दकुन्दाचार्यदेव ने जिस निजात्मतत्त्व का वर्णन किया और जिसे जानकर भव्य जीव मुक्ति को प्राप्त करते हैं, उस निजात्मतत्त्व को मैं उत्तम सुख की प्राप्ति के हेतु भाता हूँ।

(गतांक से आगे ...)

टीकाकार मुनिराज सिद्धपद की प्राप्ति के लिये शुद्ध आत्मतत्त्व को भाते हैं।

इसप्रकार आत्मज्ञानी सूत्रकर्त्ता ने विशुद्ध निजात्मतत्त्व का वर्णन किया, उसे जानकर पात्रजीव मुक्तदशा को पाते हैं। देव-शास्त्र-गुरु अथवा परपदार्थ को जानकर मुक्ति पाते हैं - ऐसा नहीं कहा; किन्तु अपने को जानकर मुक्ति पाते हैं - ऐसी बात की है। पर से जानने में न आवे किन्तु स्व से जानने में आवे, ऐसा जो शुद्ध आत्मा उसको मैं उत्तम सुख की प्राप्ति के लिए भाता हूँ।

यहाँ सिद्धों के परम सुख की बात करते हैं। लोक में सुख नहीं है। मुनिराज कहते हैं कि मुझे अन्य कोई काम नहीं है, अन्तर-एकाग्रता करके सिद्धपद पाऊँ- ऐसी भावना है। भविष्य में भगवान मिलें अथवा शुभभाव करूँ-ऐसी भावना मुनि

करते ही नहीं हैं। भक्ति में कथन आता है कि ''हे प्रभो ! भव-भव तुम्हारे चरणकमल की सेवा करूँ'' - ऐसा कथन निमित्त से है। वहाँ भी शुद्धस्वभाव की एकाग्रता की माँग है; परन्तु राग है, इसलिये प्रभु के ऊपर आरोप करते हैं।

यहाँ टीकाकार मुनिराज सिद्धपद की प्राप्ति हेतु शुद्धात्मा की भावना भाते हैं।

(वसन्ततिलका)

आद्यन्तमुक्तमनघं परमात्मतत्त्वं, निर्द्वन्द्वमक्षयविशालवरप्रबोधम्।
तद्भावनापरिणतो भुवि भव्यलोकः, सिद्धिं प्रयाति भवसंभवदुःखदूराम्।।६८।।

(रोला)

ज्ञानरूप अक्षय विशाल निर्द्वन्द्व अनूपम
आदि-अन्त अर दोष रहित जो आत्मतत्त्व है।
उसको पाकर भव्य भवजनित भ्रम से छूटें
उसमें रमकर भव्य मुक्ति रमणी को पाते ।।६८।।

परमात्मतत्त्व आदि-अन्त रहित है, दोष रहित है, निर्द्वन्द्व है और अक्षय विशाल उत्तम ज्ञानस्वरूप है। जगत में जो भव्यजन उसकी भावनारूप परिणमित होते हैं, वे भवजनित दुःखों से दूर सिद्धि को प्राप्त करते हैं।

परम आत्मतत्त्व अनादि-अनन्त है, निर्दोष है और उत्तम ज्ञानस्वरूप है।

पुण्य-पाप, संवर, निर्जरा आदि तत्त्वों से रहित परमात्मतत्त्व है। इन तत्त्वों का तो अन्त आ जाता है; किन्तु मोक्षतत्त्व का अन्त नहीं आता - फिर भी उसकी आदि तो है। देखो! शुद्ध स्वाभाविक तत्त्व आदि और अन्त दोनों से रहित है, उस परम आत्मतत्त्व में दोष नहीं है। विकार और दोष एक समय की पर्याय में होता है - त्रिकाल तत्त्व में दोष नहीं है। आत्मा द्रव्य से शुद्ध है, पर्याय से अशुद्ध है - ऐसे दो भेद अर्थात् द्वैत परमात्मतत्त्व में नहीं है। फिर वह कभी नाश नहीं होता - ऐसा अक्षय, विशाल, उत्तम ज्ञानस्वरूप है। उसका अवलम्बन लेना ही साररूप है।

भव्यजीव शुद्ध परमात्मतत्त्व की भावना भाकर मोक्षदशा को पाते हैं।

निमित्त अथवा पर्यायों को पलटने की बुद्धि - ऐसा राग करूँ, ऐसा निमित्त

मिलाऊँ, यह सब पर्यायबुद्धि है और संसार का कारण है। आत्मा ज्ञानस्वरूप है, किसी का परिवर्तनकर्त्ता नहीं - ऐसी स्वभावबुद्धि होना धर्म का कारण है। क्रमबद्धपर्याय का निर्णय कहो अथवा स्वभावबुद्धि कहो - एक ही बात है।

जो पात्र जीव अपनी शुद्ध आत्मा में एकाग्रता को प्राप्त होते हैं, वे भवजनित दुःख से दूर सिद्धदशा को पाते हैं। देव, सेठ, राजा आदि जन्म-मरण से दुःखी हैं, सर्वार्थसिद्धि के देव का भव मिलना भी दुःख है; कारण कि उतना राग विद्यमान है और उस राग के फल में भव मिलेगा ही। इसलिए जो पात्र जीव आत्मा को भजते हैं, वे दुःखों से दूर ऐसी मुक्ति को पाते हैं। ●

लड्डू गोल होता है, मीठा होता है, सबको प्रिय भी होता है। गोल का अर्थ है आदि-अन्त से रहित; क्योंकि गोल पर हाथ फेरो तो उसका न तो कहीं आरंभ होता है और न कहीं अन्त आता है; इसप्रकार वह अनादि-अनंत है, अखण्ड है। अपना भगवान आत्मा भी अनादि-अनन्त है, अखण्ड है और अनन्त आनन्दमय होने से लड्डू की भाँति मधुर भी है और लड्डू की भाँति ही आराधकों को अत्यन्त प्रिय भी है।

लड्डू चढाने का अर्थ यही हो सकता है कि हे भगवन् ! आप तो मोक्ष पधार गये; अब हम भी इस गोल, मधुर और सर्वप्रिय लड्डू को आपको समर्पित कर अर्थात् पंचेन्द्रिय विषयों को छोड़कर ज्ञान के घनपिण्ड, आनन्द के कन्द, अनादि-अनन्त भगवान आत्मा की शरण में जाते हैं।

- रक्षाबन्धन और दीपावली, पृष्ठ 46

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : आत्मा में परिणमन के लिए प्रथम क्या करना चाहिए ?

उत्तर : प्रथम सत्समागम से सत्य वस्तुस्वरूप का श्रवण करना चाहिये। जहाँ सत्य का श्रवण भी नहीं, वहाँ सत्य का ग्रहण तो हो ही कैसे सकता है ? जहाँ ग्रहण नहीं, वहाँ धारणा नहीं; जहाँ धारणा नहीं, वहाँ रुचि नहीं; और जहाँ रुचि नहीं, वहाँ परिणमन भी नहीं होता। जिसे आत्मा की रुचि होती है, उसे प्रथम श्रवण, ग्रहण और धारणा होती ही है। इसके पश्चात् अन्तर में परिणमन करने की बात आती है।

प्रश्न : आत्मख्याति को सम्यग्दर्शन कहा, आत्मप्रसिद्धि कहा, आत्मानुभव कहा, उसका क्या अर्थ है ?

उत्तर : त्रिकाली आत्मस्वभाव तो प्रसिद्ध ही था, वह रुका नहीं था; किन्तु अवस्था में पहले उसका भान नहीं था और अब उसका भान होने पर अवस्था में भगवान आत्मा की प्रसिद्धि हुई। निर्मल अवस्था प्रगट होने पर द्रव्य-पर्याय की अभेदता से 'आत्मा ही प्रसिद्ध हुआ' - ऐसा कहा है। अनुभव में द्रव्य-पर्याय के भेद नहीं हैं। रागमिश्रित विचार छूटकर ज्ञान, ज्ञान में ही एकाग्र हुआ - उसी का नाम आत्मख्याति है। उस आत्मख्याति को ही सम्यग्दर्शन कहा है। यद्यपि आत्मख्याति स्वयं तो ज्ञान की पर्याय है; किन्तु उसके साथ सम्यग्दर्शन अविनाभावी होता है; इसलिये उस आत्मख्याति को ही सम्यग्दर्शन कह दिया है।

प्रश्न : जब स्वाश्रय करे, तब सम्यग्दर्शन प्रगट होता है अथवा जब सम्यग्दर्शन हो, तब स्वाश्रय प्रगट होता है ?

उत्तर : जिस पर्याय ने स्वाश्रय किया, वह स्वयं ही सम्यग्दर्शन है; अत: उसमें पहले-पीछे का भेद ही नहीं है। जो पर्याय स्वाश्रय में ढली वही सम्यग्दर्शन है। स्वाश्रित पर्याय और सम्यग्दर्शन भिन्न-भिन्न नहीं है। त्रिकाली स्वभावाश्रित ही मोक्षमार्ग है।

प्रश्न : आपश्री के द्वारा बताया गया आत्मा का माहात्म्य आने पर भी कार्य क्यों नहीं होता ?

उत्तर : अन्दर जो अपूर्व माहात्म्य आना चाहिए वह नहीं आता। एकदम उल्लसित होकर अन्दर से जो महिमा आनी चाहिए वह नहीं आती। भले धारणा में माहात्म्य आता हो।

प्रश्न : वास्तविक माहात्म्य लाने के लिए क्या करना चाहिए ?

उत्तर : एक आत्मा की ही अन्दर से यथार्थ रुचि जगे और भव के भावों से थकान लगे तो आत्मा का अन्दर से माहात्म्य आये बिना नहीं रहता। वास्तव में जिसे आत्मा चाहिए ही, उसको आत्मा मिलता ही है। श्रीमद् ने भी कहा है -'छूटने का इच्छुक बँधता नहीं है।'

प्रश्न : उपयोग में उपयोग है - इसका क्या मतलब ?

उत्तर : उपयोग में उपयोग अर्थात् सम्यग्दर्शन की निर्विकल्प परिणति में उपयोग अर्थात् त्रैकालिक आत्मा आता है। आत्मा तो आत्मारूप-उदासीनरूप में विद्यमान है, निर्विकल्प होने पर शुद्धोपयोग में त्रैकालिक उपयोगस्वरूप आत्मा जाना जाता है।

प्रश्न : विकल्पसहित निर्णय करना सामान्य श्रद्धा और निर्विकल्प अनुभव करना विशेष श्रद्धा - क्या यह ठीक है ?

उत्तर : नहीं, श्रद्धा में सामान्य-विशेष का भेद है ही नहीं। अखण्ड आत्मा की निर्विकल्प अनुभवसहित प्रतीति करना ही सम्यग्दर्शन है। इस सम्यग्दर्शन करने वाले जीव को प्रथम 'आत्मा ज्ञानस्वरूप है'- ऐसा विकल्पसहित निर्णय होता है, तत्पश्चात् जब निर्विकल्प अनुभव करता है, तब पहले के विकल्पसहित किये गये निर्णय को व्यवहार कहा जाता है।

प्रश्न : स्वानुभव करने के लिए छह मास अभ्यास करना बताया - वह अभ्यास क्या करना ?

उत्तर : राग मैं नहीं, ज्ञायक मैं हूँ - इसप्रकार ज्ञायक की दृढता जिसमें हो वैसा बारम्बार अभ्यास करना।

प्रश्न: आत्मा की रुचि हो और सम्यग्दर्शन न हो सके तो अग्रिम भव में होगा क्या ?

उत्तर : आत्मा की सच्ची रुचि हो, उसे सम्यग्दर्शन होगा ही - अवश्य होगा। यथार्थ रुचि और लक्ष्य होने पर सम्यग्दर्शन न हो, यह तीन काल में नहीं हो सकता। वीर्य में हीनता नहीं होनी चाहिए, वीर्य में उत्साह और नि:शंकता होनी चाहिए। कार्य होगा ही - इसप्रकार हमारे निर्णय में आना चाहिए।

समाचार दर्शन -

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 19 सितम्बर से 28 सितम्बर, 2012 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

नागपुर (महा.) : यहाँ समाज के विशेष आग्रह पर जयपुर से पधारे अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रात्रि में दशलक्षण धर्म और अन्त में क्षमावणी विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुये। इसके अतिरिक्त पण्डित मनीषजी शास्त्री खतौली द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार, दोपहर में सिद्धचक्र मण्डल विधान की जयमाला और रात्रि में क्रमबद्धपर्याय पर प्रवचन हुये। दोपहर में 1.30 से 3.45 तक सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित मयंकजी जैन अमरमऊ ने पण्डित मनीषजी शास्त्री खड़ैरी के सहयोग से कराये। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में प्रवचनोपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

ज्ञातव्य है कि श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट की रजत जयन्ती के अवसर पर डॉ. भारिल्ल को यहाँ विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। उनके पधारने से विशेष प्रभावना हुई।

जयपुर (टोडरमल स्मारक भवन) : यहाँ प्रतिदिन प्रात: दशलक्षण महामण्डल विधान का आयोजन किया गया, तत्पश्चात् डॉ. श्रेयांसजी सिंघई शास्त्री (विभागाध्यक्ष-जैनदर्शन विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर) द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार के निर्जरा अधिकार पर प्रवचन हुये। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति व छात्र प्रवचन के पश्चात् पण्डित पीयूषजी शास्त्री द्वारा 'धर्म के दशलक्षण' विषय पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला। रात्रि में महिला मण्डल एवं महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री ने संपन्न कराये। समस्त कार्यक्रम पण्डित पीयूषजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुये।

राजकोट (गुज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: पूजन-विधान के उपरान्त डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में तत्त्वचर्चा एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि के प्रवचन में युवाओं की रुचि विशेष रूप से दिखाई दी। इस अवसर पर

प्रात: गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन भी हुये। कार्यक्रम में प्रतिदिन 600-700 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर किले अन्दर के बड़े मन्दिर में प्रात: नित्यनियम पूजन एवं दशलक्षण मण्डल विधान के उपरान्त 9 से 10 बजे तक अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा समयसार के कर्ताकर्म अधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुये।

दोपहर में 3 से 4 बजे तक श्रीमती कमला भारिल्ल द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक पर महिलाओं की कक्षा ली गई। सायंकाल सामूहिक जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त 8 से 8.45 तक पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रभावी प्रवचन हुये। तीनों समय आशातीत उपस्थिति से वातावरण उत्साहवर्धक रहा। रात्रि में प्रवचन के पूर्व सुश्री सर्वदर्शी भारिल्ल द्वारा बालकक्षा चलाई गई। प्रवचन के उपरान्त सर्वदर्शी भारिल्ल एवं श्रीमती श्रद्धा जैन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम चलाये गये, जिनमें विशेष धर्मप्रभावना हुई।

अन्तिम दिन सभी कार्यकर्ताओं को सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हुए पण्डित श्री रतनचंदजी भारिल्ल को अभिनन्दन-पत्र भेंट करते हुए सर्वज्ञजी भारिल्ल एवं सर्वदर्शी भारिल्ल को प्रतीक चिह्न प्रदान किये गये। **- मलूक चन्द जैन**

जयपुर (आदर्शनगर) : यहाँ प्रतिदिन नित्यनियम पूजन के उपरान्त पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन एवं विदुषी समता झांझरी उज्जैन द्वारा प्रवचन एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म के आधार से प्रवचन हुये। दोपहर में विदुषी समता झांझरी द्वारा महिला मण्डल की कक्षा ली गई। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। धूप दशमी के अवसर पर 'इन भावों का फल क्या होगा ?' विषय पर झांकी का आयोजन किया गया।

सिलवानी (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर तारण तरण दि. जैन समाज के आमंत्रण पर ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा प्रात: गुणस्थान विषय पर एवं रात्रि में बारह भावना पर प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त पण्डित योगेशजी शास्त्री जयपुर द्वारा बालकक्षा, दोपहर में क्रमबद्धपर्याय एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। प्रवचनोपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। आपकी प्रेरणा से यहाँ तारण तरण बाल परिषद का गठन हुआ।

अहमदाबाद-नवरंगपुरा (गुज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार के कर्ताकर्म अधिकार पर, दोपहर में परमभाव प्रकाशक नयचक्र पर एवं रात्रि में तीन लोक पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला।

इस अवसर पर प्रात: दशलक्षण विधान एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन चलते थे। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सभी कार्यक्रमों का आयोजन वी.के. पटेल हॉल में किया जाता था, जिसमें लगभग 1000 साधर्मियों की उपस्थिति रहती थी।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य स्थानीय विद्वान पण्डित दीपकजी कोटिडिया के निर्देशन में सिद्धभक्ति मण्डल द्वारा कराये गये। समस्त कार्यक्रम श्री अजितभाई के निर्देशन में युवा साथियों के सहयोग से संपन्न हुये। अनंत चतुर्दशी के दिन दोपहर में पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के निर्देशन में रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया। ज्ञातव्य है कि पर्व के बाद पण्डित संजीवजी गोधा का एक मार्मिक प्रवचन **पालड़ी** स्थित जैन मंदिर में भी हुआ।

बड़ौदा (गुज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: नित्यनियम पूजन के उपरान्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा समयसार की 17-18 गाथा पर एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक के 7वें अधिकार पर प्रवचन हुये। क्षमावणी के दिन सोनगढ यात्रा की गई, जहाँ सम्मेदशिखर पंचकल्याणक की पत्रिका प्रदानकर आमंत्रण दिया गया।

तीर्थधाम सिद्धायतन द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' द्वारा प्रात: समयसार (47 शक्तियाँ), दोपहर में पद्मनंदि पंचविंशतिका के आधार पर दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित मनोजजी करेली एवं पण्डित वैभवजी पिड़ावा द्वारा प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान का भी आयोजन किया गया। प्रतिदिन सायंकाल जिनेन्द्र-भक्ति, गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन एवं सिद्धायतन के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुये। महिलाओं की कक्षा श्रीमती ममता जैन धर्मपत्नी श्री आदीशजी जैन दिल्ली द्वारा ली गई।

इस अवसर पर मुम्बई, दिल्ली, जयपुर, कोटा, इन्दौर, जबलपुर, औरंगाबाद, कोल्हापुर, सिवनी, अशोकनगर आदि नगरों से आये हुये लगभग 300 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। दिनांक 29 सितम्बर को समापन समारोह में आसपास के नगरों में प्रवचनार्थ पधारे हुये विद्वानों का सम्मान किया गया। **- डॉ. गुलाबचन्द जैन**

भागलपुर-चम्पापुर : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: नित्यनियम पूजन के पश्चात् ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा प्रात: एवं सायं दोनों समय मोक्षमार्गप्रकाशक पर सारगर्भित प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त स्थानीय विद्वान पण्डित जागेशजी शास्त्री द्वारा कक्षा भी ली गई।

खुरई (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर समाज के विशेष आग्रह पर श्री टोडरमल महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील एवं विदुषी प्रतीति शास्त्री पधारे। आपके द्वारा प्रात: समयसार की 31वीं गाथा पर एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर सरल-सुबोध भाषा में हुये विशेष व्याख्यानों को समाज ने विशेष तौर पर सराहा। विदुषी प्रतीति शास्त्री ने दोपहर में इष्टोपदेश की कक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। सभी सांस्कृतिक कार्यक्रम तत्त्वज्ञान से भरपूर होने से विशेष सराहना मिली। सभी कार्यक्रमों में

श्रीमंत सेठ धर्मेन्द्रकुमारजी जैन परिवार का विशेष सहयोग रहा। **- डॉ. सत्यप्रिय**

दिल्ली (विश्वास नगर) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा प्रात: तत्त्वार्थसार पर एवं रात्रि में धन्यमुनिदशा विषय पर प्रवचन हुये। प्रवचनोपरान्त श्रीमती स्वर्णलता जैन द्वारा प्रश्नमंच का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

प्रात: पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली द्वारा दशलक्षण मण्डल विधान कराया गया एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर **वस्त्रापुर** स्थित दि. जैन मंदिर में पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान के पश्चात् समयसार पर प्रवचन एवं रात्रि में विभिन्न विषयों पर प्रवचन का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के रूप में विविध पौराणिक कथाओं का सुन्दर प्रस्तुतीकरण भी पण्डित संजयजी के निर्देशन में ही हुआ।

अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के अन्तर्गत स्थापित श्री सीमन्धर जिनालय एवं अध्यात्मधाम ऋषभायतन में ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा, पण्डित रितेशजी शास्त्री पिड़ावा के प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिदिन प्रात:काल नित्यनियम पूजन के उपरान्त ब्र. हेमचंदजी द्वारा प्रात: प्रवचनसार की गाथा 1 से 50 तक एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित अश्विनजी नानावटी, श्री वीतराग-महिला मण्डल एवं युवा व महिला प्रकोष्ठ के तत्त्वावधान में आयोजित किये गये।

इस अवसर पर ब्र. हेमचंदजी द्वारा 'धर्म विज्ञान की कसौटी पर' विषय पर एक विशेष व्याख्यान भी दिया गया। **- प्रकाशचंद पाण्ड्या**

मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रतिदिन नित्य नियम पूजन के उपरान्त गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन हुये। इसी प्रसंग पर डॉ. दीपकजी जैन जयपुर द्वारा समयसार, जैनदर्शन में कर्मसिद्धान्त एवं दशलक्षण धर्म पर विशेष प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में मंगलार्थी छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

इस अवसर पर पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया द्वारा भी प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित अशोकजी भीलवाड़ा पंचकल्याणक हेतु कोटा, भीलवाड़ा, नीमच एवं चित्तौड़गढ भी गये, जहाँ उनके प्रवचनों का लाभ स्थानीय समाज को प्राप्त हुआ।

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा द्वारा दशलक्षण धर्म एवं विविध विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला। यहाँ 24 से 30 दिसम्बर तक

होने वाले पंचकल्याणक संबंधी विशेष दिशा-निर्देश भी प्राप्त हुये।

दिनांक 29 सितम्बर से 4 अक्टूबर तक श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर बिजौलिया में पंच दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा एवं पण्डित देवेन्द्रजी जैन बिजौलिया द्वारा प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

उदयपुर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर मुमुक्षु मण्डल में पण्डित देवेन्द्रकुमारजी शास्त्री बिजौलिया द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

कारंजा (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल' द्वारा प्रात: समयसार एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त गुरुकुल के बच्चों के लिए मोक्षमार्गप्रकाशक पर कक्षा का भी आयोजन किया गया।

मुम्बई (घाटकोपर) : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के पश्चात् पण्डित नंदकिशोरजी शास्त्री काटोल द्वारा समयसार के पुण्य-पाप अधिकार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित अनिलजी जैन, पण्डित भावेशजी जैन एवं दिव्या जैन द्वारा संपन्न कराये गये। प्रवचन हेतु सर्वोदय हॉस्पिटल ने हॉल की व्यवस्था की थी। इस अवसर पर विशेष उपलब्धि के रूप में प्रतिदिन समाज में स्वाध्याय की गतिविधि प्रारंभ होनी निश्चित हुई है।

एरणाकुलम-कोचिन (केरल) : यहाँ श्री महावीरस्वामी दिगम्बर जैन मुमुक्षु चैत्यालय में डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन तथा भक्तामर स्तोत्र की कक्षा हुई। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। **– शैलेष एम.दोशी**

गंजबासौदा (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन तारणतरण समैया समाज में पण्डित केसरीचन्दजी 'धवल' द्वारा ममलपाहुड के आधार से दशधर्मों का वर्णन किया गया।

फुटेरा (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: नित्य नियम पूजन के अतिरिक्त ब्र. धर्मेन्दजी जैन द्वारा दशलक्षण धर्म पर एवं पण्डित सुशीलजी शास्त्री द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार पर श्रावक के बारह व्रत विषय पर प्रवचन हुये।

मुम्बई-जोगेश्वरी (पूर्व) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया द्वारा 'पंचलब्धि' विषय पर व्याख्यान हुये, जिसका स्थानीय समाज ने लाभ लिया।

कानपुर-किदवई नगर (उ.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: नित्यनियम पूजन के उपरान्त पण्डित अनुभवप्रकाशजी शास्त्री द्वारा दशलक्षण धर्म पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला साथ ही पण्डित अखिलेशजी शास्त्री द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर गांधीनगर में पण्डित सौरभजी शास्त्री कोटा

द्वारा प्रात: समयसार पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में पण्डित चेतनजी जैन द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा ली गई।

प्रात: सामूहिक पूजन के अतिरिक्त रात्रि में जूनियर महिला मण्डल, सौरभजी शास्त्री व चेतनजी शास्त्री द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

देवली-टोंक (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनालय में पण्डित संजयजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा प्रात: पूजन के आधार पर प्रवचन, दोपहर में सात तत्त्व विषय पर कक्षा, सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

नातेपुते (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: सामूहिक पूजन के उपरान्त पण्डित विवेककुमारजी शास्त्री भिण्ड द्वारा समयसार के कर्ता-कर्म अधिकार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। **– चेतन दोशी**

वाशिम (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर जवाहर कॉलोनी स्थित श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर में पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में मंगलाष्टक के अर्थ, सायंकाल विषापहार स्तोत्र का अर्थ एवं रात्रि में परमार्थ वचनिका पर प्रवचन हुये।

सायंकाल श्रीमती स्वस्ति विराग जैन द्वारा बाल कक्षा का संचालन किया गया एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। **– संतोष पाटनी**

दलपतपुर-सागर (म.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में प्रात: विदुषी अनु शास्त्री द्वारा इष्टोपदेश पर, दोपहर में विदुषी नयना शास्त्री द्वारा तत्त्वार्थसूत्र पर एवं रात्रि में स्थानीय विद्वान पण्डित निखलेशजी शास्त्री द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय राजेन्द्र पार्क में पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री दलपतपुर द्वारा प्रात: पूजन के उपरान्त विभिन्न विषयों पर प्रवचन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। प्रवचन के उपरान्त शंका समाधान कार्यक्रम भी रखा गया। तत्पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

सागर (म.प्र.) : यहाँ महावीर जिनालय में ब्र. बासंतीबेन देवलाली एवं अन्य ब्र.बहनों द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान के उपरान्त समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। अन्य बहनों ने दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र का अर्थ सहित वाचन एवं पंचलब्धि विषय की कक्षा ली। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। **– संतोष जैन**

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर लाला गोकुलचन्द दिगम्बर जैन मंदिर लोहामण्डी में पण्डित धनेन्द्रजी सिंहल द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय गंज में प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं सायंकाल

दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

मड़ावरा-ललितपुर (उ.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित आशीष कुमारजी शास्त्री कोटा द्वारा प्रात: व दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक तथा रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

– देवकीनन्दन जैन

अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर मणिनगर में नित्यनियम पूजन के उपरान्त गुरुदेवश्री का सी.डी.प्रवचन एवं तत्पश्चात् पण्डित मीठाभाई दोशी हिम्मतनगर द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशलक्षणधर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में स्वानुभूतिदर्शन पर तत्त्वचर्चा एवं रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा कार्यक्रम एवं सांस्कृतिक कायक्रमों का भी आयोजन हुआ।

– डॉ. संजय जे. मेहता

अहमदाबाद-सुरेन्द्रनगर (गुज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी द्वारा प्रात: बहनश्री के वचनामृत, दोपहर में समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इस अवसर पर प्रात: दशलक्षण विधान के उपरान्त गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों का भी आयोजन हुआ। कार्यक्रम में लगभग 250-300 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

जयपुर (बड़ा मन्दिर) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर तेरापंथियान घीवालों का रास्ता में प्रतिदिन दशलक्षण विधान के उपरान्त पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

जयपुर (मालवीय नगर-सेक्टर 7) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में प्रतिदिन प्रात: दशलक्षण विधान के अतिरिक्त सायंकाल पण्डित मनीषजी शास्त्री कहान द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

– नथमलजी झांझरी

इनके अतिरिक्त जयपुर में विभिन्न स्थानों पर प्रवचनार्थ विद्वान निश्चित किये गये थे, जिनका विवरण निम्नानुसार है - 1. सेठी चैत्यालय सी-स्कीम में **पण्डित नीतेशजी शास्त्री,** 2. श्री दिगम्बर जैन मंदिर बड़े दीवानजी (राजस्थान जैनसभा) में **पण्डित सोनूजी शास्त्री,** 3. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर प्रताप नगर-सेक्टर 17 में **पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना,** 4. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जयजवान कॉलोनी में **पण्डित संजीवजी शास्त्री खड़ैरी,** 5. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर गायत्रीनगर में **पण्डित विनयकुमारजी पापड़ीवाल,** 6. श्री जैन स्वाध्याय मन्दिर, चित्रकूट कॉलोनी सांगानेर में **डॉ. प्रभाकरजी सेठी,** 7. श्री महावीर पब्लिक स्कूल सी-स्कीम में **पण्डित अभिषेकजी शास्त्री कोलारस,** 8. श्री महावीर दिगम्बर जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय सी-स्कीम में **पण्डित अपूर्वजी शास्त्री जयपुर,** 9. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सिवाड़ बाकलीवाल में **पण्डित अभिषेकजी शास्त्री कोलारस,** 10. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सेक्टर-5 प्रतापनगर में **पण्डित चिन्मयजी शास्त्री गुढाचन्द्रजी,** 11. श्री दिगम्बर जैन

मन्दिर खजांची की नसियां में **पण्डित सौरभजी शास्त्री** द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

सुलतानपुर (उ.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित देवांगजी शास्त्री मुम्बई द्वारा प्रात: अर्थसहित नित्यनियम पूजन, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। सभी साधर्मियों ने बहुत उत्साह के साथ कार्यक्रमों का लाभ लिया एवं तीन छात्रों ने टोडरमल महाविद्यालय में अध्ययन करने की स्वीकृति दी।

चित्तौड़गढ (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित कैलाशचन्दजी शास्त्री द्वारा अध्यात्म सहित करणानुयोग की चर्चा की गई। अनेक चार्टों के माध्यम से करणानुयोग व अध्यात्म का लाभ उपस्थित साधर्मियों को मिला।

कोटा (राज.) : यहाँ रामपुरा में पर्व के अवसर पर पण्डित सचिनजी अकलूज द्वारा प्रात: तत्त्वार्थसूत्र, दोपहर में तत्त्वचर्चा एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। प्रात: सामूहिक जिनेन्द्र पूजन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं कु. मुक्ति जैन द्वारा बालकक्षा का भी आयोजन हुआ। आपकी 9 वर्षीय पुत्री कु. मुक्ति जैन ने प्रश्नमंच के माध्यम से सभी साधर्मियों को आश्चर्यचकित एवं प्रसन्न कर दिया।

– माणकचन्द जैन

बैरसिया-भोपाल (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर जैन कॉलोनी स्थित श्री दि. जैन नवीन मंदिर में पण्डित जीवनकुमारजी शास्त्री घुवारा द्वारा दशलक्षण धर्म एवं छहढाला पर प्रवचन हुये।

– वीर नितिन जैन, वीर रीतेश जैन

सुगन्ध दशमी के अवसर पर झांकी

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में सुगन्ध दशमी के अवसर पर अ.भा. जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर द्वारा सायंकाल **'सम्यग्दर्शन के अष्ट अंग'** विषय पर आधारित भव्य सजीव झांकी का आयोजन किया गया। इसमें टोडरमल महाविद्यालय के 100 छात्रों के साथ-साथ वीतराग-विज्ञान पाठशाला के नन्हे-मुन्ने बच्चों ने भी भाग लिया।

सभी दर्शनार्थी एक ओर तो त्रिमूर्ति जिनमंदिर की भव्यता देखकर अभिभूत थे, दूसरी ओर सम्यग्दर्शन विषय को इतने सरल तरीके से प्रस्तुत करने को लेकर भी आश्चर्य व्यक्त कर रहे थे। इस अवसर पर हजारों लोगों ने झांकी की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

झांकी का उद्घाटन श्रीमती नीलम जैन-परितोषवर्धनजी, गौरव जैन, श्रीमती पूजा जैन जनता कॉलोनी एवं श्री राजेन्द्रजी गोधा ने किया।

इस कार्यक्रम में टोडरमल स्मारक परिवार के समस्त सदस्यों, महानगर शाखा एवं वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल का विशेष सहयोग रहा।

– संजय शास्त्री

अलवर के विविधि उपनगरों में ...

1. श्री रत्नत्रय जिनालय : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित जयकुमारजी कोटा द्वारा नियमसार एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त पण्डित अमोलजी महाजन व पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री द्वारा विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

2. श्री दिगम्बर जैन मंदिर, शान्तिकुंज : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित अजितजी शास्त्री द्वारा मध्यलोक में स्थित जिनालयों की रचना तथा 13 द्वीपों की रचना का संक्षिप्त परिचय दिया गया। इसके अतिरिक्त इन्द्रध्वज मण्डल विधान श्री तिमांशुजी अलवर के सहयोग से पण्डित पीयूषजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा संपन्न कराया गया।

3. श्री सम्भवनाथ दिगम्बर जैन मंदिर शिवाजी पार्क : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर रात्रि में पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री के प्रवचन हुये। तत्पश्चात् श्री संभवनाथ दिगम्बर जैन नवयुवक मण्डल तथा महिला मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

विधि-विधान के कार्य पण्डित प्रेमचन्दजी जैन द्वारा कराये गये। विधान के मध्य में तेरह द्वीप के चैत्यालयों की समय-समय पर जानकारी भी दी गई, साथ ही समागत विषय वस्तु का भी परिचय कराया गया।

4. श्री महावीर जिनालय कालाकुआं : यहाँ पर्व के अवसर पर नित्य नियम पूजन के अतिरिक्त पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

5. श्री दिगम्बर जिनमंदिर 60 फुट रोड़ : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित अमोलजी महाजन शास्त्री द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचन हुये।

विशेष : दिनांक 28.9.2012 को शहर विधायक श्री बनवारीलालजी सिंघल के करकमलों से 'सर्वोदय अहिंसा अभियान' के अन्तर्गत प्रकाशित पटाखे विरोधी पोस्टर का विमोचन किया गया। इसके अतिरिक्त शहर के अन्य पंचायती मंदिरों में विधान एवं प्रवचनों का आयोजन समाज द्वारा किया गया। **– अजितकुमार शास्त्री**

प्रो. भानावत : जैन अनुशीलन केन्द्र के निदेशक

जयपुर (राज.) : यहाँ राजस्थान विश्वविद्यालय के जनसंचार केन्द्र के प्रो. संजीव भानावत को विश्वविद्यालय के जैन अनुशीलन केन्द्र का तीन वर्षों के लिए मानद निदेशक नियुक्त किया गया है। इन्होंने कई पुस्तकें भी लिखी हैं। अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ के गठन में डॉ. भानावत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

इस उपलब्धि पर वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

क्षमावाणी एवं विद्वत् सम्मान समारोह संपन्न

दिल्ली : यहाँ अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र पर ब्र. संध्या बहन शिकोहाबाद, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज एवं विदुषी राजकुमारी जैन दिल्ली द्वारा प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

इस अवसर पर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री विमल कुमार कुसुम जैन परिवार, विवेक विहार दिल्ली द्वारा समयसार महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के कार्य पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल एवं पण्डित कान्तिकुमारजी इन्दौर द्वारा संपन्न कराये गये।

दिनांक 30 सितम्बर को क्षमावणी पर्व के अवसर पर विशाल सभा का आयोजन किया गया, जिसमें दिल्ली के विभिन्न उपनगरों में प्रवचनार्थ गये 47 विद्वानों का ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री विमलकुमारजी, श्री पृथ्वीचंदजी, श्री अजितप्रसादजी, श्री आदीशजी, श्री सुमतिकुमारजी सेठिया द्वारा सम्मान किया गया। सभी स्थानों पर विद्वानों द्वारा पूजन, प्रवचन, जिनेन्द्र भक्ति व सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

सम्मान समारोह के अध्यक्ष श्री सुभाषचंदजी जैन नांगलोई एवं मुख्य अतिथि श्री आर.सी. जैन (न्यायाधीश) थे। इस अवसर पर सोनगढ, राजकोट, अहमदाबाद, ऐटा, खंडवा, जामनगर, इन्दौर, महाराष्ट्र, मुम्बई आदि स्थानों से लगभग 250 साधर्मीजन उपस्थित थे। संपूर्ण कार्यक्रम के निर्देशक ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री थे।

पर्व के दौरान 47 स्थानों में से 25 स्थानों पर ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री द्वारा प्रवचन एवं सम्मेदशिखर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का हार्दिक आमंत्रण दिया गया।

– सुमतिकुमार सेठिया

'मोना' ने मनाया दशलक्षण महापर्व

मोना (मुमुक्षु ऑफ नॉर्थ अमेरिका) द्वारा टेलिफोन एवं कम्प्यूटर के माध्यम से दशलक्षण पर्व मनाया गया। प्रात: गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन के पश्चात् ब्र. हेमन्तभाई गांधी द्वारा ustream पर प्रवचन सायंकाल विदुषी अल्पना भारिल्ल शास्त्री द्वारा प्रवचनों का लाभ नॉर्थ अमेरिका एवं भारत के अनेक मुमुक्षुओं ने लिया।

इसके अतिरिक्त नित्यनियम पूजन एवं प्रतिक्रमण का भी कार्यक्रम हुआ।

हार्दिक बधाई !

1. कोलकाता निवासी श्री महावीरप्रसादजी सरावगी द्वारा 1 सितम्बर को 74वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में वीतराग-विज्ञान हेतु 300/- रुपये प्राप्त हुये।

2. श्री सुरेशचंदजी जैन (रिजर्व बैंक वाले) की ओर से दिनांक 10 अक्टूबर को पौत्र के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में वीतराग-विज्ञान हेतु 250/- रूपये प्राप्त हुये।

वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

शोक समाचार

1. बेलगांव (कर्नाटक) निवासी श्रीमती कुसुम पाटील धर्मपत्नी पण्डित एम.बी. पाटील का दिनांक 11 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

श्री एम.बी.पाटील मूलत: शेडवाल ग्राम के निवासी होने पर भी साहित्य-साधना एवं तत्त्वप्रचार के लिए 1988 को बेलगांव आ गये और समयसार आदि कुन्दकुन्द साहित्य का कन्नड में भाषान्तर करके छपवाया। शिविरों के माध्यम से साहित्य का प्रचार कर्नाटक प्रान्त में किया। अनेक नगरों में आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों का आयोजन भी किया। बैंगलोर में दि.जैन ट्रस्ट द्वारा संचालित शिविरों में भी सेवाएं देते थे। आत्मधर्म कन्नड (मासिक) का भी अनेक वर्षों तक कार्य किया। इन सब कार्यों में आपकी पत्नी श्रीमती कुसुम पाटील बहुत सहयोग करती थीं। आपकी स्मृति में आपकी पुत्री विदुषी धवलश्री द्वारा संस्था को 2200/- रुपये प्राप्त हुये।

2. नागपुर (महा.) निवासी श्री सुन्दरलालजी मामाजी का दि. 5 अक्टूबर को 95 वर्ष की आयु में शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया।

स्वामीजी की उपस्थिति में नागपुर में तत्त्वप्रचार करने विद्वान जाते रहे हैं, उन्हीं दिनों आप एवं आपकी पत्नी श्रीमती चम्पीबाई ने अनेक वर्षों तक विद्वानों की व्यवस्था की थी। बाद में भी मामाजी का सहयोग समाज को मिलता रहा। यहाँ निर्मित नवीन जिनमंदिर में भी आपका विशेष सहयोग रहा। आप नागपुर मुमुक्षु मण्डल के मूल आधार थे।

ज्ञातव्य है कि आप डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर (स्नातक-टोडरमल महाविद्यालय) एवं श्री अशोककुमारजी के मामाजी थे।

3. कोलारस (म.प्र.) निवासी चौधरी श्री रतनचन्द्रजी जैन का दिनांक 21 सितम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

4. हिंगोली (महा.) निवासी जिनधर्मप्रेमी एवं प्रसिद्ध उद्योगपति श्री रेणुकादासजी दोडल का क्षमावाणी के दिन अत्यंत समताभावपूर्वक देहावसान हो गया। आपका जीवन सामाजिक एवं आध्यात्मिकरूप से ओतप्रोत था। आप सदैव जिनवाणी के प्रचार में प्रयासरत संस्थाओं के ट्रस्टी एवं विभिन्न सामाजिक कार्यों के संयोजक थे।

5. मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) निवासी श्रीमती सन्तोषकुमारी धर्मपत्नी श्री चन्द्रभूषणजी जैन महलका वाले का दिनांक 5 अक्टूबर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं, जयपुर में लगने वाले शिविरों में भी आप उपस्थित रहती थीं।

आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 11 हजार रुपये की राशि प्राप्त हुई।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही दु:खों से छूटकर अभ्युदय को प्राप्त हों-यही मंगल भावना है।